M.A. Semester - I
Philosophy C.C - 03

Prof. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Theory of Knowledge of Plato

(Part - III)

Plato के अनुसार 'Thing in itself' का ज्ञान ही सत्य है अनुभव जगत् परिवर्तनशील है अतः ये मात्र आभास मात्र हैं। यहाँ Plato का मत Kant से भिन्न हो जाता है क्योंकि Kant के अनुसार 'Thing in itself' ज्ञानातीत है इसलिए इनके सम्बन्ध में ज्ञान की सत्यता और असत्यता की बात ही नहीं की जा सकती, उनके अनुसार अनुभव जगत् ही यर्थाथ ज्ञान की दृष्टि में वास्तविक है। (Plato के अनुसार Thing in itself का ज्ञान होता है Kant के अनुसार नहीं)

अपनी उक्त मीमांसा के आधार पर Plato अपनी पुस्तक 'Republic VI' में ज्ञान के चार प्रकारों — 'प्रतिभासिक', 'व्यावहारिक', 'बौद्धिक' और 'Rational Insight' मानकर स्वीकार करते हैं, अन्तिम Rational Insight ही सर्वोच्च ज्ञान है, क्योंकि इसके विषय Ideas हैं और द्वन्द्वात्मक न्याय से प्राप्त किया जाता है। यह ज्ञान ऐन्द्रिक विषयों से परे विशुद्ध Ideas का ही ज्ञान है।

इस प्रकार Plato के अनुसार Ideal ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है, क्योंकि इसके विषय ही अपरिणामी, सामान्य, नित्य और शाश्वत होते हैं जो कि ज्ञान के वास्तविक विषय हैं। Plato के अनुसार ऐसे ज्ञान की खोज ही दर्शन का प्रधान लक्ष्य है।

अरस्तु Plato की ज्ञान मीमांसा स्पष्ट हो जाती है, अब हम इसकी समीक्षा करेंगे।

अरस्तु प्रभृति दार्शनिकों की आलोचना है कि Plato ने अपनी ज्ञान मीमांसा में Ideal ज्ञान को वास्तविक मानकर अनुभूत जगत को असत् मान लिया है, जबकि अनुभूत जगत की सत्ता प्रतीत होती है।

किन्तु प्रत्यालोचना स्वरूप कहा जा सकता है कि Plato के ज्ञान मीमांसा के प्रति यह आलोचना ठीक नहीं क्योंकि Plato ने कभी अनुभव जगत् को असत् नहीं माना है। अपनी ज्ञान मीमांसा में स्वीकार करता है कि अनुभव जगत से ही प्रत्ययों का संस्मरण होता है। फिर अपने तत्वमीमांसा में भी वह मानता है कि अनुभव जगत असत् नहीं बल्कि प्रत्यय जगत् की अभिव्यक्ति है। यह बात Plato के 'पार्मेनाइडीज' नामक ग्रन्थ में मिलता है और ऐसा लगता है कि अरस्तु ने उस ओर ध्यान नहीं दिया है।

फिर Plato के प्रति यह भी आक्षेप किया जाता है कि वह Idea को सामान्य, नित्य, अपरिणामी और गतिशून्य मानता है और स्वीकार करता है कि अनुभव जगत् का ज्ञान इन Ideas के द्वारा ही होता है किन्तु अनुभव जगत की वस्तुओं में गति और परिवर्तन है अतः यह बात समझ में नहीं आती कि अपरिणामी, गतिशून्य Ideas से गतिशील और परिवर्तनशील अनुभव जगत् के वस्तुओं का ज्ञान कैसे होता है? अतः आलोचकों के अनुसार Plato के दर्शन की यह कमजोरी है।

इस प्रकार Plato के ज्ञान मीमांसा के प्रति तथाकथित आलोचनाएँ की जाती है, फिर भी उसके ज्ञान मीमांसा का महत्व इस बात में है कि उसी से Kant वगैरह विचारक अपनी

ज्ञान मीमांसा का सूत्र प्राप्त करते हैं। अतः आज के विकसित दार्शनिक युग में यद्यपि कि Plato का ज्ञान सिद्धान्त संगत नहीं हो सकता फिर भी उसका ऐतिहासिक महत्व काफी है।

x ———— x

Pal. 1 — 1.9

4.2

III 5.2